ध्रुपद

राग-शुद्ध सारंग

स्थाई- निरंजन निराकर, निरुपम नही कोउ समान ।
निर्गुन अरु सगुन होत, रमें रहत सबन में ।

अंतरा- निज-जन प्रहलाद काजे, प्रगटे प्रभु फारी खंम्भ ।
रूप धरे नरसिंह, असुर मारे छिन मे ।